सरसों फसल का कृषि अर्थव्यवस्था में विशेष योगदान है– डॉ. अरविन्द कुमार

सरसों अनुसंधान निदेशालय का 26 वां स्थापना दिवस समारोह

सरसों अनुसंधान निदेशालय के 26 वें स्थापना दिवस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रानी लक्ष्मीबाई केन्द्रीय कृषि विश्विद्यालय, झांसी के कुलपति डॉ. अरविन्द कुमार ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि अनुसंधान एक सतत प्रक्रिया है और देश के राई–सरसों वैज्ञानिकों द्वारा कई उन्नत किस्मों एवं तकनीकों का विकास किया गया है। इस फसल का देश की कृषि अर्थव्यवस्था में विशेष योगदान है। उन्होने कहा कि जिन किसानों ने वैज्ञानिक सलाह के अनुसार सरसों की खेती की है उनकी उत्पादकता में बढोत्तरी हुई। तकनीकी का क्रियान्वयन सही तरह से करने से उत्पादन में वृद्धि होती है। सरसों कम पानी में होने के साथ–साथ विपरीत जलवायु परिस्थितियों में अनुकूलता प्राप्त करके अच्छा उत्पादन देती है। सरसों पोषण सुरक्षा के लिए भी एक महत्वपूर्ण फसल है। सरसों में आमेगा–3 एवं ओमेगा–6 का सही संतुलन होने के कारण इसका तेल स्वास्थ्यवर्धक है। राई–सरसों का उत्पादन एवं उत्पादकता बढाने एवं राई–सरसों की गुणवत्ता वाली किस्मों के विकास में वैज्ञानिकों का प्रयास सराहनीय है। उन्होने तेल की गुणवत्ता बढाने एवं तेल की फोर्टीफिकेशन की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होने कहा कि तकनीकी विकास एवं प्रसार का देश की आर्थिक स्थिति में प्रभाव का अध्ययन किया जाना चाहिए। उन्होने कहा कि निदेशालय द्वारा विकसित किस्में आज किसानों में काफी लोकप्रिय हो रही हैं। किसानों को गुणवत्ता वाला बीज उपलब्ध करवाने के लिए व्यापक प्रयास किये जा रहे है। मिट्टी, जल एवं जलवायु को संरक्षित करना वर्तमान की आवश्यकता है। फसल अवशेषों के प्रबंधन की जरूरत है। किसानों को समेकित खेती के लिए वैज्ञानिकों द्वारा जागरूक किया जाना चाहिए। सरसों की खेती के लिए मृदा प्रबंधन महत्वपूर्ण है। इसमें सूक्ष्म पोषक तत्वों का संतुलित प्रयोग करना चाहिए। समेकित पोषक तत्व प्रबंधन, समेकित रोग एवं कीट प्रबन्धन को अपनाने से सरसों की उत्पादकता में बढोत्तरी होगी। उन्होने कहा कि जलशक्ति अभियान को बढावा दिया जाना चाहिए। कम पानी एवं बारानी क्षेत्रों के लिए अधिक उपज वाली सरसों की उन्नत किस्मों के विकास के लिए और अधिक कार्य करने की आवश्यकता है। पानी की बचत के लिए खेती में सूक्ष्म सिंचाई पद्धतियों को अपनाना होगा। उन्होने कहा कि हमारी आवश्यकता का करीब 50 प्रतिशत से अधिक आयात करना पडता है। इस पर वैज्ञानिकों को चितंन करना चाहिए और उत्पादकता बढाने के लिए गंभीर प्रयास करने होंगे। रेडियों कृषि सरसों शिक्षा कार्यक्रम ने वैज्ञानिक तकनीकों का प्रचार–प्रसार करने मे अहम योगदान दिया है।

इस अवसर पर केन्द्रीय भेड एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर के निदेशक डॉ राघवेन्द्र सिंह,, ने कहा कि स्थापना दिवस अपनी गतिविधियों एवं उपलब्धियों का आंकलन करने का समय होता है। फार्मर फर्स्ट कार्यक्रम के बारे में जानकारी देते हुये सरसों की नई किस्मों की उपलब्धियों की सराहना की। उन्होने कहा कि बदलती परिस्थितियों के अनुरूप अनुसंधान के लिए सभी लोगों को मिलकर कार्य करना चाहिए।

केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मकदूम, मथुरा के निदेशक डॉ. एम.एस. चौहान ने कहा कि बढते खाद्य तेलों के आयात को कम करने के लिए जीएम फसलों के विकास की आवश्यकता है। उन्होने संस्थानों में आपसी

सामन्जस्य को बढाने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होने विश्व उत्पादकता की तुलना मे भारत मे कम उत्पादकता पर चिंतन करने और देश की उत्पादकता बढाने के लिए प्रयास करने की जरूरत पर जोर दिया।

कार्यक्रम की शुरूआत करते हुए निदेशक डॉ. पी.के. राय ने सभी अतिथियों का स्वागत किया और भारत में तिलहन उत्पादन राई –सरसों अनुसंधान एवं प्रसार, निदेशालय की स्थापना इसके उद्देश्य एवं उपलब्धियों की विस्तार से जानकारी दी। डॉ. राय ने इस अवसर पर सभी हितधारकों का निदेशालय के अनुसंधान एवं विकास में योगदान देने के लिए आभार व्यक्त किया। उन्होने निदेशालय की विकास की यात्रा का प्रस्तुतीकरण भी दिया। डॉ. पी.के.राय ने किसानों के हितों के लिए निदेशालय द्वारा चलाये जा रहे कार्यक्रमों मेरा गांव मेरा गौरव, अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन, रेडियों कृषि शिक्षा कार्यक्रम अनुसूचित जन जाति, अनुसूचित जाति, पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास कार्यक्रम, जलशक्ति कार्यक्रम आदि के बारे में भी जानकारी दी।

संयुक्त निदेशक कृषि श्री देशराज सिंह, एवं कृषि महाविद्यालय, कुम्हेर के अधिष्ठाता डॉ. उदयभान सिंह, ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर डॉ. विनोद कुमार, डॉ. अशोक कुमार शर्मा, डॉ. पी.के.राय एवं डॉ. पी.डी.मीना द्वारा लिखित पुस्तक "राई–सरसों सूचना एवं डाटा" तथा अन्य प्रकाशनों का भी विमोचन किया गया। साथ ही वैज्ञानिक वर्ग में डॉ. के.एच.सिंह,, तकनीकी कर्मचारी वर्ग में श्री के.एन.मीना एवं श्री राम सिंह, प्रशासनिक वर्ग में श्री मुकेश कुमार, श्रीमति वीना शर्मा तथा श्री लालाराम को वर्ष 2018–19 में किये गये उल्लेखनीय कार्यों के लिए प्रतीक चिन्ह एवं प्रमाण पत्र प्रदान करके सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में राष्ट्रीय बीज निगम के क्षेत्रीय प्रबंधक श्री सतवीर सिंह, कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रभारी डॉ. धनराज शर्मा, आकावाणी मथुरा के श्री सत्यव्रत सिंह, आकाशवाणी, जयपुर के संजय दत्त तथा डॉ. अमर सिंह, डॉ. भूरी सिंह एवं निदेशालय के वैज्ञानिकों, अधिकारियों, तकनीकी कर्मचारियों ने भाग लिया।